प्रस्तु[...] तथा समय आने पर मदद
[...]कर्तव्यपरायणता के एक अनूठे उदाहरण को प्रस्तुत किया गया है। नाटक में एक राजा जंगल
[...]कर खेलते हुए भटक जाता है और उसका राजा होने का अभिमान नष्ट हो जाता है। तभी उसकी मुलाकात पुण्डरीक नामक
[...]क से होती है। राजा साधारण मनुष्य की भाँति व्यवहार करता है। पुण्डरीक अपनी कर्तव्यनिष्ठा से राजा का हृदय जीत
[...]। राजा उसे राजरत्न की उपाधि से सम्बोधित करता है और सम्मानित भी करता है।

पात्र : राजा, वनरक्षक, सरदार
स्थान : जंगल का रास्ता
समय : शाम

(राजा जंगल से निकलकर एक रास्ते के किनारे खड़ा है।)

: (*यकायक* पहुँचकर) यह तो किसी के घर का रास्ता है। यह सबके लिए खुला नहीं हो सकता। (*चुपचाप होठों पर उँगली रखकर*) मैं राजा हूँ। आश्चर्य है, अँधेरा मेरी कुछ भी परवाह नहीं करता, वह बढ़ता ही आ रहा है। मामूली आदमी की तरह मैं भी भूल-भटक सकता हूँ। पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाएँ भी जो मेरा आतंक मानती थीं, इस समय सब चुप हैं। दरबार में बढ़-चढ़कर बातें करने वाली मेरी बुद्धि इस समय नहीं बता सकती कि मैं किधर जाऊँ? और ये बढ़िया-बढ़िया चमकीले कपड़े! ओह! मुझे बहुत भारी लग रहे हैं। आज मेरा सारा अभिमान मुझे झूठा जान पड़ रहा है। (*हँसता है*) अच्छा हुआ, मुझे पता तो चल गया कि मैं वास्तव में राजा ही नहीं, मनुष्य भी हूँ। (*किसी की आहट सुनता है*) कोई आ रहा है! मुझे क्या करना चाहिए? क्या कुछ राजापन दिखाऊँ? नहीं, नहीं, फेंको इस राजापन के ढोंग को। मनुष्य होने का लाभ लो।

1